मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 52 अंक 9 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
सितम्बर 2016 बहाई वर्ष : 173

विश्व न्याय मन्दिर

प्रभुधर्म के पावन लेखों को पढ़ना और बहाउल्लाह के विशाल प्रकटीकरण के महत्व के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना – ये दायित्व बहाउल्लाह के प्रत्येक अनुयायी को सौंपे गए हैं। सभी के लिए आदेशित है कि वे इस महान प्रकटीकरण के समुद्र से अपनी रूचि और सामर्थ्य के अनुसार ज्ञान के मोतियों की खोज करें। *–रिज़वान 2010*

उत्तर प्रदेश में सामाजिक क्रिया पर चार दिवसीय बैठक का आयोजन

राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा तथा क्षेत्रीय बहाई परिषद उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं उत्तराखंड के संयुक्त प्रयास से उत्तर प्रदेश में लखनऊ में चार दिवसीय एक बैठक का आयोजन किया गया।

इस बैठक की चर्चा का विषय **सामाजिक क्रिया** था। इस बैठक का आयोजन 18 से 21 अगस्त, 2016 को सिटी मोंटेसरी स्कूल की एलडीए शाखा में किया गया।

बैठक में विश्व न्याय मन्दिर के सदस्य डॉ. पैमान मोहाजर और अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के सदस्य श्री प्रवीण कुमार मल्लिक व भारत में सेवारत महाद्वीपीय सलाहकार मंडल के सदस्य श्रीमती ग्लोरिया जावेद, श्री ओमिद सियोशानसियान, डॉ. जब्बार ऐदलखानी, श्री दृगपाल सिंह एवं श्री राजन सावंत; ऑफिस फॉर सोशल एंड इकोनॉमिक डेवलपमेंट (वेमक) से सीना रह्मनियाँ, प्रिपरेशन फॉर सोशल एक्शन से श्रीमती एलेन टूकन, आध्यात्मिक सभा के तीन सदस्य श्री एन. सी. बास्करन, सुश्री नाज़नीन रौहानी तथा सचिव डॉ. सोहेल मोहजर और बिहार तथा उत्तर प्रदेश से आए प्रतिभागियों सहित लगभग 50 मित्रों ने भाग लिया।

बैठक के पहले दिन परिषद द्वारा उत्तर प्रदेश रीजन की वर्तमान स्थिति को पॉवर प्वाइंट द्वारा सभी के साथ साझा किया और साथ–ही–साथ डॉ. पैमान मोहाजर से परिषद को विभिन्न महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हुए।

ऑफिस फॉर सोशल एंड इकोनॉमिक डेवलपमेंट (वेमक) तथा सोशल एक्शन डेस्क द्वारा तैयार की गई अध्ययन सामग्री का सभी मित्रो ने अध्ययन किया तथा उस पर विचार विमर्श किया गया।

इस बैठक में उपस्थित मित्रों को विश्व न्याय मन्दिर के सदस्य डॉ. मोहाजर, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केंद्र के सदस्य श्री मालिक तथा भारत में सेवारत महाद्वीपीय सलाहकारों द्वारा सामाजिक क्रिया पर बहुत रुचिकर विचार–विमर्श और सामाजिक क्रिया पर विशेष अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई।



लखनऊ में आयोजित बैठक में प्रतिभागी विचार–विमर्श करते हुए

इस अंक में

बिहार में तीन दिवसीय क्षेत्रीय परामर्शी बैठक सम्पन्न

अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के सदस्य–सह–अन्तर्राष्ट्रीय सलाह–कार श्री प्रवीण कुमार मल्लिक तथा महाद्वीपीय सलाहकार द्वै सर्वश्री राजन सावंत एवं दृगपाल सिंह की विशेष उपस्थिति में तीन दिवसीय क्षेत्रीय परामर्शी बैठक का आयोजन गत् 30, 31 जुलाई एवं 1 अगस्त, 2016 को किया गया। क्षेत्रीय बहाई परिषद, बिहार एवं झारखण्ड के तत्त्वाधान में आयोजित उक्त बैठक में बिहार–झारखण्ड से 31 एवं पश्चिम बंगाल से कुल 6 प्रतिभागियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज़ की। तत्पश्चात् महाद्वीपीय सलाहकार श्री दृगपाल सिंह के मार्गदर्शन के आलोक में बिहार–झारखण्ड एवं पश्चिम बंगाल में संचालित गतिविधियों की समीक्षा की गई। ज्ञात हो कि बिहार में ग्रुप ऑफ़ क्लस्टर की संख्या (बिहारशरीफ़, पटना, अलौली, ख़गड़िया एवं जमशेदपुर) 5 है, जिसमें प्रथम मील के पत्थर वाले क्लस्टरों की संख्या 31 एवं द्वितीय मील के पत्थर वाले क्लस्टरों की 14 है। इसी तरह पश्चिम बंगाल में ग्रुप ऑफ़ क्लस्टर की संख्या (इंदपुर, जॉयपुर, केशियारी, कोलकाता एवं मेटली) 5 है एवं वहाँ गाँवों की संख्या 105 है जिसमें 51 समुदाय में गतिविधियाँ संचालित हैं।

अलौली के मित्रों ने बताया कि अलौली एवं उसके आठ पड़ोसी समुदाय–समूह में कुल गाँवों की संख्या 2000 है जिसमें से 18 गाँवों में गतिविधियाँ संचालित हो रही है। इतना ही नहीं यहाँ पर अध्ययनवृत कक्षा की संख्या 30, किशोर समूह कक्षा की संख्या 75, बहाई बाल नैतिक कक्षा की संख्या 148 तथा नियमित प्रार्थना सभा की संख्या 130 एवं प्रभातकालीन प्रार्थना सभा की संख्या 8 है, जिसमें प्रतिभागियों की संख्या क्रमशः 259, 536, 1492, 1559 एवं 55 है।

उक्त समीक्षोपरांत समागत प्रतिभागियों ने पायनियरिंग से संदर्भित विश्व न्याय मंदिर के 23 मई, 2016 के परिपत्रों का अध्ययन किया। अध्ययन के क्रम में महाद्वीपीय सलाहकार श्री राजन सावंत ने पायनियरिंग को प्रभुधर्म के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी बताते हुए कहा कि–सन् 1910 तक प्रभुधर्म की ज्योति सिर्फ पवित्र भूमि तक ही सिमटी थी किन्तु 1953–1963 के मध्य धर्मसंरक्षक, शोगी एफ़ेन्दी ने जो 10 वर्षीय योजना दी उसमें 32 लक्ष्य थे, जिसमें से एक था प्रभुधर्म की ज्योति को सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैलाना। दिल्ली में बहाई उपासना मंदिर का निर्माण करना भी इन्हीं 32 लक्ष्यों में से एक था किन्तु सबसे बड़ा लक्ष्य विश्व न्याय मंदिर की स्थापना करना था।



बिहार में आयोजित परामर्शीय बैठक के प्रतिभागी

वर्ष 2001 में विश्व न्याय मंदिर ने जो पूरे विश्व में क्लस्टीकरण किया उसका जिक्र करते हुए श्री सावंत ने पायनियरिंग के लिए

शेष पृष्ठ 2 पर

संस्थागत पहल करने की बात बताई।

गत चक्र के दौरान पटना क्लस्टर के पड़ोसी समुदाय–समूह हाजीपुर में उभर कर आयी अन्तर्दृष्टियों का जिक्र करते हुए संबंधित मित्रों ने बताया कि यहाँ 10–12 युवाओं का एक दल है जो टीम वर्क के रूप में कार्य कर रहे हैं। यहाँ समन्वय की योजना काफी बेहतर है। नियमित रूप से समीक्षा बैठकें भी आयोजित होना प्रारंभ हो गया है। यहाँ तक कि हाजीपुर में 50–60 किशोर कार्यक्रम स्थापित करने से सम्बद्ध योजना को कार्य रूप देने हेतु यहाँ के 8 युवाओं ने ओसेड के परिपत्रों का भी अध्ययन हाल के दिनों में किया है। तत्वतः ऐसे क्लस्टरों को और तेजी से सशक्त करने की जरूरत है ताकि ये पास–पड़ोस के समुदायसमूह को भी मदद कर सके। इसी तरह मित्रों ने बताया कि व्यापक पैमाने पर बिहार–झारखण्ड में 29 दिसम्बर, 2010 के परिपत्र एवं ओसेड के परिपत्र आदि का अध्ययन किया जा रहा है। साथ ही सभी उन्नत समुदाय–समूह में कैम्पेन आयोजित किये जा रहे हैं तथा पुनः युवा सम्मिलन को चक्र का एक हिस्सा बनाया जा रहा है। मित्रों ने पुनपुन क्लस्टर के बेहरावाँ, चकिया एवं फतुहा में आयोजित युवा सम्मिलन से सम्बन्धित अनुभवों को भी साझा किया।

प्रथम दिन के द्वितीय सत्र में श्री मल्लिक ने दक्षिण उपक्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले पटना, फतुहा, पुनपुन, विक्रम, जहानाबाद, आरा, जगदीशपुर, गया, अरवल, हाजीपुर, मुज़फ्फरपुर, छपरा, एवं मोतीहारी में संचालित गतिविधियों का मूल्यांकन करते हुए कहा कि सभी मित्र अपने–अपने उपक्षेत्र को दृष्टि में रखते हुए सोचें कि वहाँ आगे क्या हो सकता है।

बैठक में मित्रों ने बख़री, मुंगेर, बैलदौर एवं बिहारशरीफ़ की गतिविधियों से संबंधित अनुभवों को भी साझा किया। इस परिप्रेक्ष्य में श्री मल्लिक ने कहा कि गतिविधियाँ स्थापित करने के साथ–साथ परिवारों को जोड़ना एवं नित नये प्रार्थना सभा स्थापित करना एक अहम् विषय है और इसके लिए आवश्यक है कि मित्रों को संस्थान प्रक्रिया, सभी शैक्षिक गतिविधियाँ व समुदाय निर्माण की प्रक्रिया की गहरी समझ के साथ–साथ शिक्षण पूर्व रूही पुस्तक छः का सम्यक् ज्ञान हो। संभव हो तो उक्त विषय पर एक परिपत्र तैयार हो जो वर्तमान एवं भविष्य में मित्रों के लिए सहायक साबित हो।

पश्चिम बंगाल से आये हुए मित्रों ने बताया कि सम्प्रति, पश्चिम बंगाल में 250–260 मित्र 29 दिसम्बर, 2015 के संदेश का अध्ययन कर चुके हैं। यहाँ कैम्पेन की अपेक्षा अध्ययनवृत कक्षा की स्थिति काफी बेहतर है क्योंकि यहाँ प्रतिभागियों को चिन्हित करने में विशेष परेशानियों का सामना करना नहीं पड़ता है। यहाँ अध्ययनवृत कक्षा सघन अध्ययनवृत कक्षा के रूप में संचालित की जाती हैं। पश्चिम बंगाल में सम्प्रति, 57 नियमित प्रार्थना सभा है। यहाँ की विशेषता है कि यहाँ प्रत्येक चक्र में क्लस्टर विकास समिति एवं प्रार्थना सभा के मेज़बानों के लिए खास बैठकें आयोजित की जाती हैं जिसके परिणामस्वरूप समीक्षा बैठक में प्रतिभागियों की संख्या में काफी वृद्धि होती है।

प्रार्थना सभा को समुदाय निर्माण का आधार–स्तंभ बताते हुए श्री प्रवीण कुमार मल्लिक ने तृणमूल स्तर से लेकर क्षेत्रीय स्तर पर सेवा देने वाले मित्रों के बीच विचारों की एकता स्थापित करने पर बल दिया। उन्होंने मित्रों को अपनी सोच–विचार एवं अंतर्दृष्टि को एकीकृत करने के साथ–साथ एक साथ मिलने, कार्य, परामर्श और समीक्षा करने की बात बताई तथा विचारों की एकता के लिए 29 दिसम्बर, 02 जनवरी, 26 मार्च, रिज़वान, 18 मई, 23 मई व ओसेड के परिपत्रों का अध्ययन सामूहिक रूप से करने की सलाह दी।

रिज़वान 2016 तक हम अपने–अपने क्लस्टरों में या पहली द्वि–शताब्दी में क्या देखना चाहते हैं, इस पर भी विस्तृत परिचर्चा हुई। श्री प्रवीण कुमार मल्लिक ने वर्तमान पंचवर्षीय योजना को तीन कालखण्ड प्रथम, छः चक्र यथा–रिज़वान 2016 से अक्टूबर, 2017 तक, द्वितीय, आठ चक्र यथा–अक्टूबर, 2017 से अक्टूबर, 2019 तथा तृतीय, छः चक्र यथा–अक्टूबर, 2019 से रिज़वान 2021 तक में विभक्त कर उक्त कालखण्ड को आशीर्वादों के काल की संज्ञा दी और इस कालखण्ड में हमें सीखना होगा कि हम कैसे जन–समुदाय को बहाउल्लाह की शिक्षाओं की ओर उन्मुख करेंगे।

बैठक में द्वितीय दिन युवा सम्मिलन, बाब और बहाउल्लाह की 200वीं जन्मोत्सव इत्यादि पर सविस्तार चर्चा की गई। मित्रों ने बाब–बहाउल्लाह की 200वीं जन्मोत्सव में बिहार–झारखण्ड के 158 समुदाय से कम–से–कम 1500–2000 मित्र आयें, इस हेतु क्षमता निर्माण विषयक् पहलुओं पर परामर्श किया, साथ ही व्यक्ति, परिवार, समुदाय एवं क्लस्टर के संबंध में प्रगाढ़ता लाने पर बल दिया गया। मित्रों ने आत्मसात् किया कि सम्बन्धों में प्रगाढ़ता तभी संभव है जब हमारा उद्देश्य एक होता है तथा हम एक दिशा में कार्य करते हैं।

सम्प्रति, सभी उन्नत समुदाय–समूह में युवा सम्मिलन हो जिसमें उसके पड़ोसी समुदाय–समूह के मित्र भी भाग लें तथा पड़ोसी समुदाय–समूह के मित्रों में ऐसी क्षमता प्रदान की जाये कि वे स्वयं अपने क्लस्टर में युवा सम्मिलन का बेहतर आयोजन कर सके; इस विषय वस्तु पर भी परामर्श किया गया।

इसी परिपेक्ष्य में अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के सदस्य श्री मल्लिक ने बताया कि प्रसार के चरण के दौरान युवा सम्मिलन करें तथा शेष दिनों में सुगठन की प्रक्रिया हेतु कैम्पेन आयोजित करें। उन्होंने ऐसे लोगों की भी अलग–अलग सूची बनाने की बात बताई जो रूही पुस्तक 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7 एवं 8 तक लेने की क्षमता रखते हों।

द्वितीय दिन के द्वितीय–सत्र का शुभारंभ पश्चिम बंगाल, झारखण्ड एवं बिहार के मित्रों के सुमधुर संगीत के साथ हुआ। कार्यक्रम के आगाज़ में महाद्वीपीय सलाहकार श्री राजन सावंत ने कहा कि गृह भ्रमण हेतु न सिर्फ रूही पुस्तक–6 के 5–6 बिन्दुओं पर केन्द्रित रहें बल्कि उसे हम व्यापक परिपेक्ष्य में देखें फिर उन्होंने बड़े ही दार्शनिक अंदाज में कहा कि संस्थाओं की क्षमताओं पर निर्भर करता है गतिविधियों का ताना–बाना।

द्वितीय कार्य दिवस के आखिरी प्रहर में योजना निर्माण से संदर्भित कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी दिया गया कि मित्रगण 2–3 समुदायों को चिन्हित करें, भ्रमण दल या होमफ्रंट पायनियर को चिन्हित करें कि कौन किस समुदाय को मदद करेंगे, कितने युवाओं के साथ अर्थपूर्ण वार्तालाप करेंगे, कितने युवा से मित्रता स्थापित करेंगे, कितने युवा सम्मिलन का आयोजन करेंगे, कितने मित्र संस्थान प्रक्रिया से जुड़ेंगे के अतिरिक्त, साथ–साथ चलने का प्रबंध, कम–से–कम 1 वर्ष तक 50–100 किशोर समूह कक्षा को बनाये रखना, सहशिक्षकों की संख्या में इज़ाफा करना तथा यह निर्धारित करना कि कौन से मित्र किस रूही पुस्तक का बेहतर अध्ययन करा सकते हैं, नामांकन/घोषणा, कितने गाँव में जन्मोत्सव मनाये जायेंगें इत्यादि।

कार्यक्रम के आख़िरी दिन प्रार्थनोपरांत सामुदायिक विद्यालय पर सोल से जुड़े मित्रों ने अपनी प्रस्तुति दी। प्रस्तुति के क्रम में मित्रों ने बताया कि भारत के छः राज्यों में सामुदायिक विद्यालय कार्यक्रम संचालित हैं। पश्चिम बंगाल के तीन समुदाय–समूह में 5 सामुदायिक विद्यालय हैं जहाँ 3 से 5 वर्ष के बच्चों को सम्पूर्ण शिक्षा प्रदान की जाती है। सामुदायिक विद्यालय के लिए वैसे गाँवों को चिन्हित किया जाना–बेहतर साबित होता है जहाँ पहले से बड़ी संख्या में बहाई गतिविधि संचालित है। पहले शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम केन्द्रीय स्तर पर 45 दिनों का होता था फिर बाद में 30 दिनों का किन्तु सम्प्रति, 15–15 दिनों का विभिन्न जगहों पर आयोजित किये जाते हैं।

सोल के कार्यक्रम संयोजक ने कहा कि–ऐसा कार्य जो सामाजिक जीवन में छोटा अथवा बड़ा बदलाव लाता है, वह सामाजिक कार्य कहलाता है और सामाजिक कार्यों की तैयारी से संबद्ध परिपत्रों के अध्ययन से मित्रों को उक्त विषय में और ज्यादा दृष्टिकोण स्पष्ट होता है।

पश्चिम बंगाल के सामुदायिक विद्यालय के शिक्षकों ने भी बताया कि प्रारंभिक दौर में काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है किन्तु शनैः–शनैः स्थिति सामान्य हो जाती है तथा स्थानीय अभिभावकों का भी सहयोग मिलना प्रारंभ हो जाता है। ज्ञात हो कि सर्वप्रथम 30 बच्चों के साथ सामुदायिक विद्यालय कार्यक्रम प्रारंभ किया गया था किन्तु, वर्तमान समय में 52 बच्चे हैं।

मित्रों द्वारा बनाई गई निर्णायक कार्य योजना की प्रस्तुति के उपरांत महाद्वीपीय सलाहकार श्री दृगपाल सिंह ने समागत सभी मानव संसाधनों से अपील की कि–सभी लक्ष्यों को पूरा करने की बागडोर उन्हीं के हाथों में है। इसी कड़ी में परिषद सचिव ने धन्यवादज्ञापन करते हुए कहा कि निर्णायक कार्ययोजना को कार्यान्वित करना एक अहम् तत्व है और इसके लिए हम सभी जिम्मेदार हैं।

BAHA'I WORLD CENTRE STAFFING NEEDS

There is nothing that brings success in the Faith like service. Service is the magnet which draws the divine confirmations. Thus, when a person is active, they are blessed by the Holy Spirit...

- Shoghi Effendi

There is an ongoing need at the Bahá'í World Centre for individuals with experience, relevant training, and enthusiasm to fill a range of specialised positions. Immediate needs exist for a Web Developer, Architects, Nurses, Project Officers, and a Properties Project Manager. A general description of these roles is provided below.

If you are able to offer service for a period of 18 months or more, you are encouraged to submit an offer of service, together with your curriculum vitae, ideally **before 14 October 2016** by completing the online Biographical Information form (available on the Offering to Serve website https://bahai.bwc.org/service/). You may also contact the Office of Personnel at serve@bwc.org for further information.

Of course, it is assumed that when someone offers to serve at the World Centre he or she will be open to serving in whatever capacity they may be called upon by the Universal House of Justice.

*****

Bahai.org Team

The Bahai.org team is responsible for the ongoing development and maintenance of Bahai.org, the Bahá'í Reference Library, Bahá'í World News Service, and a number of related websites. There is currently a need for a Web Developer and a Project Officer:

The **Web Developer** assists in the development and maintenance of the Bahai.org websites and related applications. Responsibilities include design of application and network architecture, front-end engineering and toolchain development, site analytics, and performance optimization. This role requires appropriate education and relevant experience in client-server or browser-based application development, as well as a broad and deep understanding of the languages and protocols of the web.

The **Project Officer** provides support in the following areas: information architecture, user experience design, image selection and enhancement, front-end engineering, site analytics and performance optimization, coordination of content and translation, quality control and documentation, formal writing and correspondence. This role requires skills and experience in one or more of these areas as well as a working knowledge of HTML.

Properties Project Manager

The Properties Project Manager oversees a number of property-related projects for the protection and development of Holy Places and for meeting other needs at the Bahá'í World Centre. The management of such projects requires close collaboration with other individuals and agencies, including all authorities responsible for town-planning, permitting, and conservation processes, as well as familiarity with real estate development and related transportation issues. This role requires strong management and organization skills, good interpersonal and negotiation skills, and experience in town-planning, real estate, and/or property management.

Israel Affairs Special Projects Officer (Bilingual)

The Special Projects Officer has responsibilities in a variety of areas, including media, events and project management, and relations with Israeli partner organizations under the supervision of senior staff. This role requires creativity and versatility, organization and management skills, good writing ability, and mastery of modern media. Since this role specifically seeks to engage Israeli contacts, a working knowledge of written and spoken Hebrew is advantageous.

Nurse

Nurses work as a team to address the immediate and long-term health care requirements of the World Centre staff. Together, they engage in health promotion activities, conduct health screenings, provide advice and support, facilitate access to local services and providers, and carry out administrative functions related to the care of various medical conditions. This role requires good core clinical knowledge and experience, as well as a valid full driver's license.

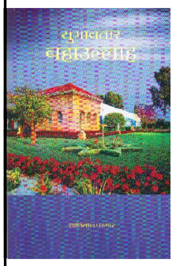
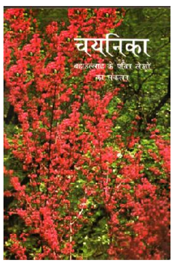
Project Architect

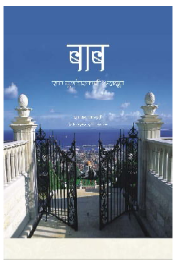
Project Architects work collaboratively as part of a team of architects, designers, and construction supervisors in the planning and execution of a variety of construction projects at the Bahá'í World Centre. This role requires at least 3 years of experience in the coordination, management and execution of construction and design projects, from conceptual design through to construction documents and construction administration. A degree in Architecture or a related field is required, and skills in advanced AutoCAD, 3D modelling (Sketch-up and others), CAD management, and maintenance of construction document sets are desirable.

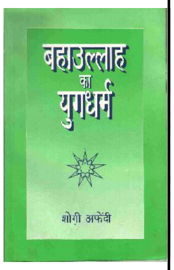
*****

बहाई पब्लिशिंग की हिन्दी पुस्तकों के सेट

विशेष छूट के साथ उपलब्ध। इस योजना का लाभ उठायें और अपने आर्डर चेक/मनीआर्डर/ड्राफ्ट के साथ हमें नीचे दिये पते पर भेजें। डाक खर्च अलग से।

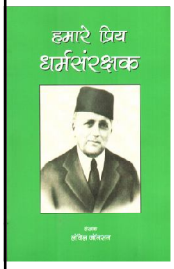



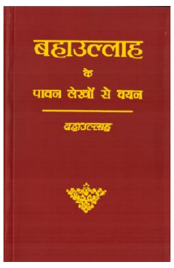


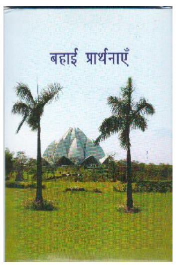


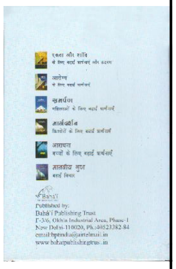
युगावतार बहाउल्लाह 100.00
चयनिका 35.00
केवल 90/– रुपयों में

बाब : एक युगांतकारी अग्रदूत 125.00
बहाउल्लाह का युगधर्म 30.00
केवल 110/– रुपयों में



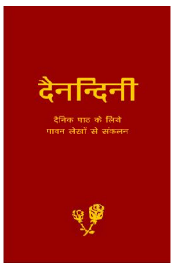


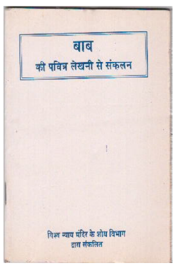
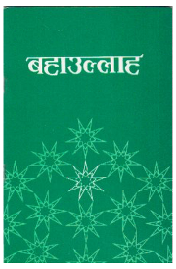




हमारे प्रिय धर्मसंरक्षक 50.00
बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन 150.00
केवल 120/– रुपयों में

बहाई प्रार्थनाएँ (छः का सेट) 50.00
एक सेट के साथ दूसरा सेट मुफ्त



दैनन्दिनी 100.00
बाब की पवित्र लेखनी से संकलन 5.00
बहाउल्लाह (वक्तव्य) 25.00
केवल 100/– रुपयों में

बहाई पब्लिशिंग ट्रस्ट

एफ – 3/6, ओखला औद्योगिक क्षेत्र,
फेज़–1, नई दिल्ली–110020
फोन: 91–11–40523382–84
ई–मेल: bptindia@airtelmail.in

Recruitment at National Bahá'í Centre

Requirement for Volunteer at the Department of Comptroller, a department of the National Spiritual Assembly of the Bahá'ís of India.

Requirement:-

Needed a suitable and enthusiastic candidate to serve in the department of comptroller preferably having some background knowledge of Budgeting, working in excel and having a commerce background.

Friends who are interested in offering their services may apply at

personnel@ibnc.in with a copy to nsaindia@ibnc.in.

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204
New Delhi P.S.O.

Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2015-16-17

बहाई कोष

fo'k"krk;i %

- केवल बहाई ही बहाई कोष में दान दे सकते हैं।
- प्रत्येक बहाई के लिए यह एक आध्यात्मिक अनिवार्यता है कि वह नियमित रूप से तथा त्यागपूर्वक कोष में दान दे।
- दान स्वैच्छिक है और इसे गुप्त रखा जाता है।
- दान माँगने की मनाही है।
- प्रत्येक बहाई को यह समझना चाहिये कि उनके दान से ही बहाउल्लाह के युगधर्म की समस्त व्यवस्था संचालित होती है।
- *"हमें अवश्य ही उस निर्झर की तरह होना चाहिये जो अपनी समस्त जलराशि उड़ेलता रहता है और एक अदृश्य स्रोत से जल प्राप्त करता रहता है। निर्धनता का भय किये बगैर, दाता की अचूक कृपा पर भरोसा रखते हुए अपने मित्रों के कल्याण के लिये लगातार देते रहना ही सही जीवन जीने का राज है।"*
- *"कोष में दान देने के मामले में अमीर और गरीब अनुयायियों की एकता कल्पनातीत आध्यात्मिक सम्पुष्टि का स्रोत है।"*
- हम बहाई कोष में दान बहाउल्लाह के लिये अपने प्रेम के कारण देते हैं। पवित्र लेखों में हमें यह आश्वासन दिया गया है कि जो दान देते हैं दान देने की उनकी क्षमता बढ़ती चली जाती है, हालांकि हम अपने दिये हुए दान के बदले कुछ पाने की अपेक्षा नही रखते। "इस बात के लिये तुम आश्वस्त रहो कि इन दानों के बदले तुम्हारी खेती–बाड़ी, तुम्हारे उद्योग और तुम्हारे व्यापार में कई गुना वृद्धि होगी और तुम्हें सुंदर उपहार और कृपा से सम्मानित किया जायेगा।"
- अगर हम थोड़ा ही दान देते हैं तो इसमें कोई हानि नहीं। यह महत्वपूर्ण है कि हम नियमित रूप से दान दें। राशि का उतना महत्व नहीं, जितना दान की भावना का महत्व है। दान देने के आशीष अनेक हैं।
- इस प्रश्न पर विचार करें : क्या हम इस बात से चिन्तित हैं कि हमारे पास दान देने को कुछ भी नहीं है और हमारे बूंद भर दान देने, न देने से प्रभुधर्म के महासागर को कोई फर्क नहीं पड़ेगा ? अगर हम दान नहीं देते हैं तो क्या हम आशीषों से वंचित नहीं रह जाते ?

सूचना

आंध्र प्रदेश में पडेरु क्षेत्र में एक पायनियर की आवश्यकता है। पायनियर के लिए जाने वाले मित्र को अगर तेलुगु भाषा आती हो तो उनके लिए बहुत अच्छा होगा।
जो कोई भी मित्र इच्छुक हो वह क्षेत्रीय बहाई परिषद आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना से sbcandhrapradesh@ibnc.in पर सम्पर्क करे।

समाचारचित्र



गुवाहाटी की स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यों–श्रीमती सविका गोगोई, श्रीमती सारदा नायक, श्रीमती वनिता दीवान, श्री दीपांकर भट्टाचार्य और श्री मुकेश दीवान ने 18 अगस्त, 2016 को, असम के मुख्यमंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल से उनके कार्यालय में मुलाकात की। उनसे मिलकर उन्हें बहाई साहित्य और दो सीडी भेंट कीं। श्री सोनोवाल ने बहाई उपासना मन्दिर के भ्रमण के बारे में बताते हुए अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।



नगालैंड, लाहौरीजन में 31 जुलाई, 2016 को उन्नीस दिवसीय सहभोज सभा के उपरान्त अनुप्रेरक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। नये और अनुभवी अनुप्रेरकों ने इसमें भाग लिया और समीक्षा में अपने अनुभव साझा किए। साथ ही, अगले दो महीनों के लिए योजना भी बनाई।

● निधन

श्री सुहास चंदेकर

हमें यह बताते हुए अत्यंत दुःख हो रहा है कि महाराष्ट्र के श्री सुहास चंदेकर का 23 अगस्त, 2016 को निधन हो गया। इस संकट की घड़ी में उनके परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए आभा लोक में उनकी आत्मा की प्रगति के लिए प्रार्थनारत हैं।

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2015-16-17
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–20
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.09. 2016
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg, New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कमार)